होली का त्योहार

Holi Ka Tyohar

होली त्योहार एक है, लेकिन पूरे देश में अगर होली खेलने के तरीके खोजने निकलें, तो इसी त्योहार के न जाने कितने रूप निकल आएँगें। दरअसल, हर जगह होली खेलने के तरीके और उससे जुड़ी अनूठी परंपराएँ हैं। जैस की बरसाने की लठमार होली को तो सब जानते हैं। बहुतों ने उसे टीवी पर या असल में देखा भी होगा, लेकिन हरियाणा में भी होली खेलने का तरीका कुछ ऐसा ही है। वहाँ लठ की जगह कोड़ों का इस्तेमाल किया जाता है। एक कपड़े को, जो अक्सर महिलाओं का दुपट्टा होता है, कसकर काफी कड़ा कर लिया जाता है और उससे महिलाएँ पुरूषों की पिटाई करती हैं। इस पिटाई के लिए भाभी देवर का रिश्ता काफी मशहूर है। बंगाल में रंगों के लिए हर सिंगार के फूल को पूरे साल रखा जाता है, सिर्फ रंग बनाने के लिए। यह त्वचा के लिए काफी अच्छा होता है और होली इसी से खेली जाती है। लेकिन सबसे पहले कृष्ण की मूर्ति के पैरों मंे गुलाल डाला जाता है। होली के दिन सुबह-सुबह घर के छोटे सदस्य निकल पड़ते हैं रंग लगाने। यहाँ सुबह की होली सूखी होती है और दोपहर को हर सिंगार से निकाला हुआ रंग लगाया जाता है। लोग जब होली खेलकर घर पहुँचते हैं तो अपने माता-पिता के पैरों में थोड़ा रंग डालते हैं। उस दिन शाम को नहाने के बाद सब एक-दूसरे के घर जाते हैं और बुजुर्गों के पैरांे में चुटकी भर रंग डालकर उनका आशीर्वाद लेते हैं।

शांतिनिकेतन की होली तो देश भर में मशहूर है। यहाँ फूलों से होली खेली जाती है। इसकी शुरूआत विश्वभारती के संस्थापक गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की थी, इसलिए लोग इस होली से जुड़ना गर्व की बात समझते हैं।

महाराष्ट्र में कुछ जगहों पर इसे शिगमा कहा जाता है और गोवा में शिगमोत्सव। तटीय इलाकों में इस उत्सव की धूम देखने लायक होती है। मछुआरों के नृत्य और उनकी मस्ती को देखकर तो कोइ भी झूम सकता है।

पंजाब मे होली का अलग ही रंग देखने को मिलता है। यहाँ होली के दौरान कुश्तियों के मुकाबले होते हैं। होली से अलग इसी दौरान होला मोहल्ला भी मनाया जाता है, जिसमें बड़े-

बड़े जुलूस निकाले जाते हैं। इन जुलूसों मे तलवारों और लाठियों के करतब देखने लायक होते हैं। राजस्थान में भी कुछ ऐसा ही देखने को मिलता है। यहाँ होली के दिन हाथियों के खेल होते हैं। राजे-रजवाड़ों की होली भी यहाँ जबर्दस्त होती है। राजाओं के कुछ वंशज अपने यहाँ उसी तरह होली मनाते हैं, जैसे राजा प्रजा के साथ मनाया करते थे।

राजस्थान के ठीक दूसरी तरफ उत्तर पूर्व में मणिपुर में होली छह दिन का त्योहार होता है। इसके लिए लोग काफी दिन पहले से पैसा इकट्ठा करना शुरू करते हैं। फागुन की पूर्णिमा से इसकी शुरूआत होती है। घास-फूस से एक झोपड़ी बनाई जाती है और इसे जलाया जाता है। अगले दिन सुबह लोग गुलाल खेलने निकल पड़ते हैं। इस दौरान यहाँ कृष्ण भक्ति का आलम भी देखने लायक होता है। भक्त गुलाल खेलते हैं, कृष्ण भक्ति के गीत गाते हैं और कृष्ण मंदिर के सामने सफेद कपड़ों और पीली पगड़ियांे में नृत्य करते हैं।

जिस देश में होली इतना बड़ा उत्सव हो, उसी देश के एक हिस्से में होली बिल्कुल नहीं मनाई जाती। सुनने में यह बात काफी अजीब लगती है, लेकिन दक्षिण केरल में होली मनाने की कोई पंरपरा नहीं है। खैर, आपके आसपास जो होली मन रही है, वो पूरे देश का संगम है, क्योंकि यहाँ पूरे देश के लोग रहते हैं। तो आप भी इस बेहतरीन संगम का लुत्फ उठाने निकल जाइए और सबको कहिए होली मुबारक।